एस0 राजू (IAS)
अपर मुख्य सचिव

उत्तराखण्ड शासन
देहरादून।
☎: 0135 2712001 फैक्स – 2712021
संख्या 29795 दिनांक 23/01/16

''सन्देश''

विद्यालयी शिक्षा परिवार के समस्त छात्र–छात्राओं, विद्वान शिक्षक–शिक्षिकाओं, शिक्षणेत्तर कर्मियों एवं सम्मानित अभिभावकों को 67वें गणतंत्र दिवस की पावनबेला पर हार्दिक शुभकामनाएं।

आज के दिन 26 जनवरी, 1950 को हमारे विद्वान संविधान निर्माताओं द्वारा निर्मित भारतीय संविधान देश में लागू हुआ। संविधान निर्मात्री सभा द्वारा भारत के संघीय स्वरूप को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में स्वीकार किया गया।

हमारे राष्ट्र की प्रमुख विशेषता 'अनेकता में एकता'' है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी ने कहा था कि हमारा राष्ट्र विभिन्न मोतियों की एक ऐसे हार (माला) की तरह है, जिसमें पृथक–पृथक मोती पिरोये गये हैं। हम सभी धर्म, जाति, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्र तथा वेशभूषा के साथ राष्ट्र के अभिन्न अंग हैं।

गणतंत्र दिवस के दिन प्रातः से ही देशवासियों के मन में उत्साह एवं उमंग स्वयमेव उत्पन्न हो जाती हैं, देशप्रेम, देशभक्ति के गीत हमें भारत का नागरिक होने पर गौरव का अहसास कराते हैं। हम उस देश के वासी हैं जहां मन में सच्चाई रहती है/सारे जहां से अच्छा आदि गाने देशप्रेम की भावना जागृत करने में उत्प्रेरक का कार्य करते हैं। इन भावनाओं को हमें बहुत गम्भीरता से लेना होगा। मौलिक रूप से हम सभी देश के प्रति असीम प्रेम करते हैं। हमें धैर्य के साथ सोचना होगा कि हम अपने देश के विकास, समृद्धि एवं उन्नति के लिए क्या कर सकते हैं।

प्रदेश में शैक्षिक उन्नयन के लिए किये जा रहे प्रयासों में हम सभी अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें, इसके लिए जरूरी है कि योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन व लाभार्थी तक पंहुच सुनिश्चित की जाय। विद्यालयों में छात्र–अध्यापकों की उपस्थिति नियमित हो, कक्षा–कक्षों का वातावरण बाल सुलभ हो, शिक्षण कार्य केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहकर व्यवहारिक व कौशल विकास आधारित हो। विद्यालय केवल परीक्षा उत्तीर्ण के केन्द्र न होकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास केन्द्र का स्वरूप लें तथा इनमें ''शिक्षार्थ आयें – सेवार्थ जायें'' की भावना विकसित हो, ऐसा समेकित प्रयास ही शिक्षित उत्तराखण्ड की भावना को विकसित करेगा। छात्र–छात्राओं में यह

भावना जागृत करें कि वे भारत की प्रभुसत्ता, एकता और आखण्डता की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। देश की रक्षा हेतु जब कभी राष्ट्र सेवा का आह्वान हो, तो राष्ट्र की सेवा के लिए तत्पर रहे।

भारत में धार्मिक, भाषायी, प्रादेशिक और वर्गीय विभिन्नताएं मौजूद हैं, विभिन्न वर्गों के बीच सामंजस्य और भ्रातृत्व बनाए रखना हमारा दायित्व है। हम उन प्रथाओं का वहिष्कार करें जो महिलाओं के सम्मान के विरूद्ध है। हम समन्वित संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझें और उनका सम्मान करें।

शिक्षण संस्थाओं में यह भी सिखाया जाये कि प्राकृतिक पर्यावरण, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और अन्य जीव भी हैं, की रक्षा एवं उनका संवर्धन किया जाय तथा प्राणीमात्र के प्रति दया भाव जागृत किया जाय।

हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम शिक्षा के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनायें तथा मानवीय पहलुओं के तहत 'अन्वेषण व सुधार की भावना' का विकास करें। हम सभी सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करें और हिंसा से दूर रहें।

अन्त में आप सभी से अपेक्षा करता हूँ कि हम संविधान की मूल भावना का सम्मान करें। स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छन्दता नहीं अपितु संविधान में वर्णित मूल अधिकारों की प्राप्ति के लिए सजगता व मूल कर्तव्यों के प्रति आत्मबोध की भावना को विकसित करना है, हम सभी इसके लिए जागृत हों, बच्चों को इस भावना से कार्य करने के लिए उनकी क्षमता को विकसित करें। पुनः सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाओं के साथ।

जय भारत!

(एस0 राजू)
अपर मुख्य सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।